**भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर**

**प्रश्न बैंक – कक्षा 10 – साखी**

**पाठ्य पुस्तक के प्रश्न – अभ्यास**

**1. मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?/ कबीर ने मीठी वाणी का क्या महत्त्व बताया है ?**

**उत्तर:-** मीठी वाणी बोलने से जीवन में शांति मिलती है। मीठी वाणी मन से क्रोध और घृणा के भाव नष्ट कर देती है। तन-मन को शीतलता प्राप्त होती है।सुननेवालों को भी सुख मिलता है । मीठी वाणी के प्रभाव से शत्रुता और ईर्ष्या की भावना दूर हो जाती है ।

2. दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है ? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए ।

कबीर कहते हैं कि जिस मनुष्य के मन में अहंकार की भावना होती है वहाँ ईश्वर वास नहीं करते । अगर हम अपने मन से अहंकार को दूर कर दें तो ईश्वर वहाँ बस जाते हैं ।

जिस प्रकार दीपक के प्रकाश से अँधेरा मिट जाता है उसी प्रकार ईश्वर-प्रेम के प्रकाश से मन का अहंकार दूर हो जाता है । यहाँ दीपक ईश्वर ज्ञान का प्रतीक है और अँधेरा अहंकार / अज्ञानता का प्रतीक है ।

**3. ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते?/कस्तूरी मृग का उदाहरण देकर कबीर ने क्या समझाया है ?**

**उत्तर:-** ईश्वर कण-कण में व्याप्त है। वह निराकार है। हम अज्ञानता के कारण ईश्वर को पहचान नहीं पाते। जिस प्रकार मृग अपनी नाभि में स्थित कस्तूरी को पूरे जंगल में ढूँढता हैं, उसी प्रकार हम अपने मन में छिपे ईश्वर को मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा सब जगह ढूँढने की कोशिश करते हैं।

4.संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन ? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं?

संसार में सुखी वे हैं जो ईश्वर को भूलकर सांसारिक सुखों में डूबे हुए हों । ये खाते हैं और सोते हैं अर्थात मोह-माया में लिप्त होकर जीवन बिताते हैं ।

दुखी वे हैं जो मोह-माया में फँसे लोगों को देखकर चिंतित हैं ,ये दिन-रात ईश्वर से मिलने के लिए जागते हैं । ये इस बात से परिचित हैं कि संसार नश्वर है और ईश्वर ही सत्य है ।

'सोना' का आशय है – ईश्वर के प्रति उदासीन होना । 'जागना' का आशय है –ईश्वर के प्रति आस्थावान होना।

**5. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?/कवि ने निंदक को अपने पास रखने की सलाह क्यों दी है ?**

**उत्तर:-** अपने स्वभाव को निर्मल रखने केलिए हमें अपने पास निंदक को रखना चाहिए जैसे आँगन में कुटिया होती है । निंदक हमारे हितैषी होते हैं। उनके द्वारा बताए गए गलतियों को दूर करके हम अपने स्वभाव को निर्मल बना सकते हैं। इस प्रकार बिना पानी और साबुन के ही वे हमारे स्वभाव को साफ़ कर देते हैं ।

**4. 'ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होई' – इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?/कबीर ने पंडित किसे कहा है ?**

**उत्तर:** कवि कहना चाहते हैं कि ईश्वर ही सर्वस्व है । वे ही जीवन के केंद्र हैं अर्थात् ईश्वर को पढ़ लेना ही पर्याप्त है। बड़े-बड़े ग्रन्थ पढ़ कर कोई पंडित नहीं बन जाता। केवल परमात्मा को जानने वाला ही सच्चा ज्ञानी और पंडित है। हमें अपने मन को सांसारिक मोह-माया से हटा कर ईश्वर भक्ति में लगाना है।

7. कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए ।

कबीर की भाषा सरल और सहज है । कबीर के द्वारा रचित साखियों में अवधी,राजस्थानी,भोजपुरी और पंजाबी भाषाओँ का मिश्रण है ।इसी कारण इनकी भाषा को 'पचमेल खिचड़ी' कहा जाता है । कबीर की भाषा को 'सधुक्कड़ी' भी कहा जाता है । कबीर भाषा का मनमाना प्रयोग करते थे । वे भाषा को जानबूझकर सँवारने का प्रयास नहीं करते । वे जैसा बोलते थे ,वैसा ही लिखते थे । उन्होंने जनचेतना और जनभावनाओं को अपने साखियों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया । कबीर को वाणी का डिक्टेटर भी कहा जाता है ।

**अन्य महत्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर**

**8.ईश्वर से अलग होने पर भक्त की स्थिति कैसी हो जाती है ?**

जब मनुष्य ईश्वर से अलग हो जाता है तो उसकी स्थिति ऐसी होती है जैसे उसके तन को साँप ने घेर लिया हो और कोई मंत्र काम नहीं आता हो । उसके बचने का कोई उपाय नहीं रहता । वह जीवित नहीं रहता । यदि वह जीता भी है तो पागल होकर जीता है ।

**9.कवि ने अपना घर क्यों जला दिया ? घर और मुराडा किसके प्रतीक हैं ?**

कवि ने ईश्वर को पाने के लिए अपना घर जला दिया अर्थात ईश्वर ज्ञान प्राप्त कर सांसारिक सुखों से मुक्ति पा ली है। घर सांसारिक सुखों का प्रतीक है और मुराडा ( मशाल ) ईश्वर-ज्ञान का प्रतीक है |

10. आलोचकों के बारे में कवि की क्या राय है ?

कबीर के अनुसार आलोचक ( निंदक ) हमारा शुभचिंतक होता है | इसकी आलोचना बहुत ही उपयोगी होती है जिसे सुनकर मनुष्य अपने अंदर सुधार लाता है और स्वयं को निर्मल और उज्ज्वल बना पाता है |

**********